वर्षा और सूर्य

१ अगस्त, २०१८

आत्मीय पाठकगण,

अगस्त माह में, मैं वर्षा के बारे में सोचती हूँ — कैसे यह पिछले कई दिनों से श्री मुक्तानन्द आश्रम के ऊपर छाए हुए बादलों का भार हल्का करते हुए खुद को मुक्त करती रही है। एक झड़ी-सी लगी रहती है पानी की, जो कभी स्थिरता से गिरती है तो कभी हवा के झोकों के साथ लहराती रहती है; कभी कुछ मिनटों तक, तो कभी घण्टों बारिश होती ही रहती है, इस बात पर निर्भर करते हुए कि उस दिन आकाश अपने उदर में कितनी वर्षा समाए हुए है। इस झरते हुए पानी की ध्वनि पर आप ध्यान कर सकते हैं; संकीर्तन कर सकते हैं या आपको इसकी जलमय तहों में से मन्त्र के स्पन्दन प्रसरित होते हुए सुनाई दे सकते हैं।

श्रीगुरुमाई ने हमें प्रायः सिखाया है कि हम वर्षा का स्वागत आशीर्वादों के सूचक के रूप में करें। अतः जब मैं बारिश को निहारती हूँ तो मुझे स्वयं को यह स्मरण दिलाना अच्छा लगता है कि, हाँ, इस संसार में भलाई मौजूद है और विपुलता में है। हाँ, इस संसार में दिव्यता अवश्य है; नवचैतन्य से पुनः भर जाने के लिए और नूतन आरम्भों के लिए यहाँ सुअवसर निश्चित ही है; मूसलाधार वर्षा की इस ध्वनि की गहराई में बसी है गहन शान्ति और मखमली मौन।

इस माह का, सिद्धयोग पथ पर और सिद्धयोग के इतिहास में अत्यधिक महत्त्व है। चान्द्र व सौर्य, दोनों ही तिथियों के अनुसार इस वर्ष ८ अगस्त को भगवान नित्यानन्द की पुण्यतिथि का पर्व है। और उसके एक सप्ताह पश्चात्, १५ अगस्त को बाबा मुक्तानन्द के दिव्य-दीक्षा दिवस की वर्षगाँठ है। और फिर, २५ अगस्त [भारत और पूर्वीय गोलार्ध के कुछ भागों में २६ अगस्त] की पूर्णिमा को हम रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाएँगे।

भारत के शास्त्र हमें बताते हैं कि जब एक महात्मा अपनी भौतिक देह का त्याग करते हैं, तो वे *सचमुच* हमें छोड़कर नहीं जाते। निर्वाण के उपरान्त, वे भले ही संसार में उस रूप में न हों जिसमें वे अब तक थे, फिर भी उनकी शक्ति, उनकी उपस्थिति, उनकी कृपा हमारे वातावरण में घुलकर उसे प्रकाशमय बनाती रहती है। एक महान विभूति की पुण्यतिथि पर हम इसी तथ्य की अनुभूति करते हैं, इसे मान्यता

देते हैं व इसी पर चिन्तन-मनन करते हैं। इसे समझने के लिए हम अनवरत रूप से होने वाली वर्षा की उपमा के बारे में सोच सकते हैं। यह हमें चारों ओर से घेरे रहती है, सब ओर चमचमाता जलरूपी परदा-सा छाया होता है। तथापि, जब हम इसे क़रीब से देखते हैं तो पाते हैं कि हर बूँद चमचमा रही है। बारिश के हर कण में, छोटी से छोटी बूँद में भी एक जादुई एहसास-सा होता है, उसमें मांगल्य और आशा की झलक होती है।

बड़े बाबा जन्मसिद्ध थे। वे इस धरा पर एक आत्मज्ञानी के रूप में ही अवतरित हुए थे; मानवरूप में उनकी उपस्थिति भर अपने आप में समस्त मानवजाति के लिए एक वरदान सिद्ध हुई। उनके विषय में अनगिनत कहानियाँ हैं कि कैसे उनके सान्निध्य में होने मात्र से लोगों के दुःख दूर हो जाते; उनका भाग्य, सौभाग्य में बदल जाता। लोग एक नए सिरे से या शायद जीवन में पहली बार जान पाते कि शान्ति क्या है। बड़े बाबा के सान्निध्य में लोग स्वयं अपनी आत्मा के सम्पर्क में आ जाते।

अतः यह विचार मात्र, हमें विनम्रता से भर देता है, हमें अभिभूत कर देता है कि बड़े बाबा के महासमाधि लेने में, उनके महानिर्वाण में भी कैसी अपरिमित करुणा थी। 'उनके महानिर्वाण में भी अपरिमित करुणा थी' ऐसा कहने के साथ-साथ शायद हम यह कह सकते हैं कि उनके महानिर्वाण में विशेषरूप से अवर्णनीय उदारता निहित थी। हमारा अहोभाग्य है कि हम बड़े बाबा के आशीर्वादों का आवाहन कर पा रहे हैं और सदा-सर्वदा कर पाएँगे।

इसलिए, बड़े बाबा की पुण्यतिथि एक उत्कृष्ट अवसर है, यह एक प्रेरणा है, "ठहरने व जुड़ने" का अभ्यास करने के लिए — बड़े बाबा के सान्निध्य में होने का स्वप्रयत्न करने के लिए; वे वास्तव में जो हैं उस सत्य को अपने हृदय में व आसपास के संसार में अनुभव करने के लिए। जब हम आकाश में लहराते कृष्ण-नील बादलों के बीच बड़े बाबा की छवि पहचान लेते हैं तो हम निश्चित ही उनके साथ सत्संग कर रहे होते हैं। जब हम उनकी प्रतिमा पर अपना ध्यान एकाग्र करते हैं — मान लीजिए कि वे सीधे बैठे हैं, उनका एक पैर दूसरी जँघा पर टिका हुआ है, उनके आसन में कैसी राजसी गरिमा है, भले ही उनकी वह तस्वीर पुराने समय की क्यों न हो, उनकी मुद्रा पर जब हम अपना चित्त एकाग्र करते हैं तो निस्सन्देह हम उनके साथ जुड़े हुए होते हैं। जब हम उनका महिमागान करते हुए 'नित्यानंद आरती' गाते हैं, तब मराठी भाषा के उन पदों का माधुर्य उन सख़्त से सख़्त दीवारों को भी पिघला देता है जो खुद हमने अपने हृदय के चारों ओर खड़ी कर ली होती हैं और तब हमें सहज रूप में अन्दर से ही पता चल जाता है कि हमारी आवाज़ किसी ऐसी चीज़ में मिलकर उसके साथ एक हो रही है जो हमसे कहीं अधिक महान है। और जब हम उनके स्वरूप पर गुरुमाई जी द्वारा लिखित धारणा का अभ्यास करते हैं

तो इसमें कोई आश्चर्य न होगा अगर हमें यह अनुभव हो कि उनकी मुस्कान हमारे अपने हृदय में प्रतिबिम्बित हो रही है; वह प्रतिबिम्ब ऐसा हू-ब-हू होता है कि उसके पीछे के कारण को व परिणाम को पहचानना मुश्किल होता है — यदि ऐसा हो तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि हम परम सत्य के साथ सामरस्य की अनुभूति कर रहे हैं।

अपनी पुस्तक 'गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द' में बाबा मुक्तानन्द अत्यन्त सुन्दरता से बताते हैं कि जो लोग बड़े बाबा से प्रेम करते हैं व उनकी आराधना करते हैं उन सबके लिए बड़े बाबा की पुण्यतिथि का क्या अर्थ है। बाबा जी कहते हैं :

> श्रीगुरुदेव जैसे थे वैसे ही हैं। वे यहीं हैं।
> वे पूर्ण थे और आदि काल से अन्त तक पूर्ण ही रहेंगे।[१]

* * *

अन्तर-सम्बन्ध, अनन्तता, अन्तर-सम्बन्ध की अनन्तता — अगस्त माह में विभिन्न पर्वों को मनाते हुए श्रीगुरुमाई के २०१८ के सन्देश से सम्बन्धित ये सभी विषय उभर रहे हैं।

बाबा मुक्तानन्द ऐसा वर्णन करते हैं कि १५ अगस्त, १९४७ को भगवान नित्यानन्द से शक्तिपात दीक्षा प्राप्त होने के बाद जब वे बाहर आए तो कुछ ही देर में किंचित् वरुण देव की कृपा हुई, मन्द-मन्द वर्षा की महीन बूँदें हलके-से पड़ने लगीं। अपनी आध्यात्मिक आत्मकथा 'चित्शक्ति विलास' में वे इस दिन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह "मंगलानां च मंगलम्" दिन था।

उस दिन बड़े बाबा द्वारा अनुग्रह करने के परिणामस्वरूप इतने पुण्यों का संचय हुआ, इतनी कल्याणकारिता की वर्षा हुई कि इससे स्वयं बाबा जी की साधना व प्राप्ति का विकास हुआ और उसके साथ-साथ इसने आने वाली पीढ़ियों के विश्वभर के साधकों की साधना को भी अग्रसर किया। बाबा जी ने हज़ारों लोगों को यह पावन दीक्षा प्रदान की और एक शक्तिपात गुरु के रूप में उनकी ख्याति सर्वत्र फैली, इसका बीज उसी मंगलमय घटना में निहित है जो १५ अगस्त के दिन घटी। यही नहीं, यह वह दिन भी था जिसका मांगल्य पूरे विश्व में भी उतना ही प्रकट होता दिख रहा था जितना कि बाबा जी के जीवन में। यह वह दिन था जब अन्तर का स्वातन्त्र्य बाहर भी प्रतिबिम्बित हुआ था, क्योंकि उसी दिन देश की स्वतन्त्रता के लिए चलाया गया भारत का अनवरत व कठोर अभियान अन्ततः फलीभूत हुआ था।

मुझे ज्ञानेश्वरी की यह ओवी याद आ रही है जो बाबा जी व बड़े बाबा, दोनों का वर्णन करती है और साथ ही अत्यन्त सटीक रूप में यह भी बताती है कि बाबा जी की दिव्य दीक्षा के फलस्वरूप कितने व्यापक रूप में मानवजाति का कल्याण हुआ। ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं :

> जयजय वो शुद्धे। उदारे प्रसिद्धे।
> अनवरत आनंदे। वर्षतिये॥
>
> हे अनुग्रहकारिणी शक्ति, आपकी जय हो!
> आप शुद्ध हैं, अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध हैं
> और आप अनवरत रूप से आनन्द की वर्षा करती रहती हैं![२]

हर वर्ष अगस्त माह में, बाबा जी द्वारा 'चित्शक्ति विलास' में वर्णित उनके शक्तिपात की अनुभूति का वर्णन सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाता है। यह एक अप्रतिम उद्धरण है जो हमें बार-बार अपनी ओर आकर्षित करता है, जो बार-बार संकेत कर हमसे कहता है कि हम इसे पढ़ें, पुनः-पुनः पढ़ें और खोज करें कि इसमें हमारे लिए और क्या-क्या है जिस पर हम चिन्तन-मनन कर सकते हैं व जिस पर हम मन्त्रमुग्ध हो सकते हैं। मेरे लिए शायद यह, किसी अन्य चीज़ से भी बढ़कर, बाबा जी के माहात्म्य की, उनकी उदारता की अभिव्यक्ति है। शक्तिपात दीक्षा हमें हमारे अपने सच्चे स्वरूप की झलक दिखाती है। जीवन की इस अनमोल घटना से जुड़ी अपनी अनुभूति का इतनी जीवन्तता से, सुस्पष्टता व विस्तार से वर्णन कर, बाबा जी हमें उस लक्ष्य के बारे में सिखा रहे हैं जिसकी हमें ललक है और जिसे पाने के लिए हम प्रयत्नरत हैं।

इसलिए, यदि बाबा जी की शक्तिपात दीक्षा के वर्णन को सारांश में बताया जाए तो ऐसा करना उसके साथ न्यायोचित न होगा — आपको स्वयं ही उसे पढ़ना होगा। फिर भी, उसमें से एक अंश है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान अभी आकर्षित करना चाहूँगी।

अपने वर्णन में बाबा जी 'अनेक में एक' के भाव की अनुभूति के विषय में तथा अन्दर-बाहर के जगत में भिन्न-भिन्न भेद करने वाली वृत्ति के विलय के बारे में बताते हैं। वे बताते हैं कि उन्हें अनन्त ज्योतियों का किरणपुंज, चमचम करती चमकीली, अणु से भी अणु, नीली, छोटी-छोटी चिनगारियाँ लकलकाती हुई सर्वांग में और बाहर भी दिखने लगीं जो मन्द-मन्द वर्षा की कोमल फुहार में घुलमिल रही थीं। यह एक विलक्षण वर्णन है, अनेकत्व में एकत्व का, उस चिति का जो सर्वव्यापिनी है; यह 'जुड़ाव' यानी

'अन्तर-सम्बन्ध' का अद्‌भुत वर्णन है। बाबा जी द्वारा किया गया वर्णन हमें बताता है कि 'जुड़ाव' इस विश्वब्रह्माण्ड का मूल स्वरूप ही है, यह 'जुड़ाव' वह आधार है जिस पर यह जगत प्रकट हुआ है।

जब हम बाबा जी की दिव्य दीक्षा के विषय में उनके शब्द पढ़ते हैं तो वे शब्द हमें प्रेरणा देते हैं कि हम अपनी आध्यात्मिक साधना में प्रवृत्त हों। और वे शब्द हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि हम एक स्पष्ट समझ के साथ, एक नए दृष्टिकोण के साथ अपनी साधना करें, हम यह समझें कि हमारी साधना 'जुड़ने' का एक निरन्तर चलने वाला प्रयास ही है, और इसका उद्देश्य ही है 'जुड़ना'। 'जुड़ाव' की प्राप्ति के लिए हम 'जुड़ने' का अभ्यास करते हैं।

* * *

इस माह के अन्त में, २६ अगस्त को जब चन्द्रमा अपनी पूर्ण कला को प्राप्त होगा, तब हम रक्षाबन्धन का त्यौहार मनाएँगे। इस दिन, जुड़ाव या सम्बन्ध विशेषतः ठोस रूप लेता है, रंगबिरंगी राखियों के रूप में जो एक-दूसरे की कलाई पर बाँधी जाती हैं। भारत में, बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है जो उनके बीच के प्रेम व संरक्षण के भाव का प्रतीक होती है। सिद्धयोग पथ पर रक्षाबन्धन, गुरु व शिष्य के बीच विद्यमान प्रेम व संरक्षण के सम्बन्ध की अभिस्वीकृति करने व इसे दृढ़ बनाने का समय है, और साथ ही साधकों के परस्पर जुड़ाव का भी।

एक धागे में, विशेषरूप से राखी में कैसी प्रतीकात्मकता है। धागा जोड़ता है, धारण करता है, कड़ी जोड़ता है, यह दो बिन्दुओं को एक-साथ जोड़ने वाला सेतु होता है। और जब उस रेशमी धागे के दोनों सिरों को जोड़कर, २६ अगस्त के चन्द्रमा सदृश, पूर्ण गोलाकार बनाया जाए तो क्या होता है? यह जुड़ाव, यह सम्बन्ध अन्तहीन बनता है, अनन्त बनता है, यहाँ तक कि यह एक शाश्वत सम्बन्ध बन जाता है। श्रीगुरु के साथ हमारे सम्बन्ध का यह एक बिलकुल सटीक द्योतक है।

मैं आपको प्रोत्साहित करूँगी कि जब आप अगस्त माह में पर्वों को मनाएँगे और इसकी खोज जारी रखेंगे कि 'जुड़ाव' का आपके लिए क्या महत्त्व है और इसका आपके लिए क्या अर्थ है, तो सिद्धयोग पथ की वेबसाइट ज़रूर देखें। यह आपके लिए एक निरन्तर सम्बल और साधन के रूप में सिद्ध होगी। आरम्भ में मैंने आपसे बड़े बाबा की कहानियों के बारे में कहा, उनकी कृपा व उनके दर्शन के बारे में कहा; ये सब इस माह के आरम्भ में वेबसाइट पर दिए जाएँगे। 'चित्‌शक्ति विलास' में से बाबा जी के शक्तिपात का अनुभव निश्चित ही दिया जाएगा व उसके साथ-साथ उनकी कुछ सिखावनियाँ भी होंगी। इसके अलावा, गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश पर वीडिओ के रूप में प्रवचनों की शृंखला का पहला

भाग भी वेबसाइट पर दिया जाएगा; ये प्रवचन माननीय व अनुभवी सिद्धयोग विद्यार्थियों तथा शिक्षकों द्वारा दिए जाएँगे।

और, इतना ही नहीं है, २५ अगस्त से ९ सितम्बर तक 'एक मधुर सरप्राइज़' सत्संग एक बार फिर वेबसाइट पर उपलब्ध होगा। मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप इसमें पुनः भाग लें या अगर आपने इसमें पहले भाग नहीं लिया है तो अब अवश्य ही भाग लें; मैं आपको इसके लिए भी प्रोत्साहित करूँगी कि आप गुरुमाई जी के सन्देश-प्रवचन की सिखावनियों के अध्ययन व अभ्यास के प्रति सतत वचनबद्ध बने रहें।

सिखावनियों के अध्ययन व अभ्यास में वचनबद्ध रहने के लिए मैं आपको इसलिए प्रोत्साहित करती हूँ क्योंकि ये सिखावनियाँ सूरज की किरणों की तरह हैं जो वर्षा के समय, जल से लदे बादलों को भेद देती हैं जिससे बारिश की बूँदें चमचमाने लगती हैं — चूँकि हमने इस बारे में पहले चर्चा की ही है, अतः यह बात हम अब तक तो समझ ही चुके हैं कि किरणों के कारण बारिश की बूँदें कैसे चमचमाती हैं। और, सूर्यप्रकाश की विशेषता यह है कि वह उस चमक को और भी प्रखर बना देता है।

आदर सहित,

ईशा सरदेसाई

---

[१] गणेशपुरी निवासी भगवान नित्यानन्द, पृ. ६३।

[२] ज्ञानेश्वरी, १२.१; स्वामी कृपानन्द, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY Press, १९८९] पृ. १७५।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।